"ग्रीष्मकालीन मूंग"

भूमि का चयन एवं खेत की तैयारी :–

- मूंग सभी प्रकार की भूमियो में लगाई जा सकती है लेकिन अच्छे जल निकास वाली दोमट भूमि सबसे उपयुक्त है।
- बलुई दोमट से दोमट भूमि जिसमें जल निकास उचित हो और पी.एच. मान 6.5 से 8.0 के मध्य हो को उपयुक्त मानी जाती है।
- भूमि में प्रचुर मात्रा में स्फुर का होना लाभप्रद होता है।

उन्नत किस्में :–

- हम–16, पूसा विशाल, पूसा–9531, मेहा, पी.डी.एम.–11, पी.डी.एम.–139 (सम्राट) एवं हम–12

बुआई का समय :–

- ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई का उपयुक्त समय 1 मार्च से 15 मार्च तक है।

बीज दर :–

- ग्रीष्म कालीन मूंग की बुआई के लिए छोटे एंव मध्यम दाने वाली प्रजातियों की 18 से 20 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर प्रयोग करें।
- बड़े दाने वाली जातियों के लिये 22 से 25 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है।

बीजोपचार :–

- बीज बोने से पहले फफूंदनाशक दवा (थायरम 2 ग्राम + 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम) कुल 3 ग्राम दवा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग करे।
- बीज को थायोमेथाक्जाम 70 डब्ल्यू.एस. 3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करे। जिससे सफेदमक्खी के प्रकोप को रोका जा सके।
- अंत में राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर की 10–10 ग्राम मात्रा प्रति कि. ग्रा. बीज की दर से उपचारित करे।

बुआई की विधि :–

- सीड ड्रिल द्वारा बुआई कतारों में करनी चाहिये।
- ग्रीष्मकालीन मूंग की पंक्तियों से पंक्तियों की दूरी 30 से.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 8 से 10 से.मी. रखे तथा बीज 2.5 से 3 से.मी. की गहराई पर बोये।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन :–

- मूंग की फसल के लिए 20 कि.ग्रा. नत्रजन, 50 कि.ग्रा. स्फुर (100 कि.ग्रा. डी.ए.पी. / हेक्टेयर) तथा 20 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर बोने के समय प्रयोग करें।
- गंधक की कमी वाले क्षेत्रो में 20 कि.ग्रा. गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से देना चाहिये।

सिंचाई प्रबंधन :–

- ग्रीष्मकालीन मूंग फसल की अच्छी वृद्धि व विकास के लिए 3 से 4 सिंचाई आवश्यक है।

खरपतवार नियंत्रण :–

- बुआई के प्रथम 20 से 25 दिनों में खरपतवार फसल से ज्यादा स्पर्धा करते है। अतः बुआई के 15 से 20 दिनों के अंदर कसोले से निंदाई गुड़ाई कर खरपतवारों को नष्ट कर दें।
- ग्रीष्मकालीन मूंग में नींदा नियंत्रण हेतु पेंडामिथलीन 38.7 प्रतिशत (स्टाम्प एक्सट्रा) 1750 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर बुआई के तुरन्त बाद छिड़काव करें।

कीट नियंत्रण :–

- फेरोमोन प्रपंच पॉच प्रति हेक्टेयर की दर से लगाये।
- टी (T) आकार के पक्षी आश्रय स्थल (बर्ड पर्चर) 50 प्रति हेक्टेयर की दर से लगाये।
- वयस्क पतंगो को आकर्षित करने के लिए प्रकाश प्रपंच लगाये।
- एन.पी.व्ही. 250 एल.ई प्रति हेक्टेयर का उपयोग करें।
- क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर या क्विनालफॉस 25 ई.सी. 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर या रनाक्सीपायर 20 एस.सी. 100 मि.ली. प्रति हेक्टेयर या इन्डाक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 500 मि.ली. प्रति हेक्टेयर 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से कीटो का नियंत्रण होता है।

रोग नियंत्रण :–

- **पीला मौजेक रोग –**

  रोग प्रतिरोधी किस्में लगावे जैसे – पी.डी.एम.–139 (सम्राट), पूसा

विशाल, टी.एम.वी.–37 एवं हम–12
ग्रसित क्षेत्रों को चिन्हित कर पौधो को उखाड़ कर नष्ट करें।
प्रभावित क्षेत्रो में मूंग बीज को थायोमेथाक्जाम 70 डब्ल्यू.एस. के 3 ग्राम प्रति किलो की दर से बीज को उपचारित करना चाहिये। सफेद मक्खी का प्रकोप दिखाई देने पर थायोमेथाक्जाम 25 डब्ल्यू.जी. 100 ग्राम या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 100 मि.ली. प्रति हेक्टेयर 500 से 600 लीटर पानी घोल बनाकर छिड़काव करें।

- **सर्कोस्पोरा लीफ स्पॉट** – थायोफिनेट मिथाइल 500 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 750 ग्राम प्रति हेक्टेयर 500 लीटर पानी में छिड़काव करने से सर्कोस्पोरा लीफ स्पाट (पत्तियों पर धब्बे) के प्रकोप से नियंत्रण मिलता है।

उपज :–

- ग्रीष्मकालीन मूंग की 12 से 15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती हैं।